भारतसरकार
GOVERNMENT OF INDIA
भारत मौसम विज्ञान विभाग
INDIA METEOROLOGICAL DEPARTMENT
मौसम केंद्र,बिरसा मुंडा विमानपत्तन
METEOROLOGICAL CENTRE, BIRSA MUNDA AIRPORT
राँची, झारखण्ड, पिन- 834002
RANCHI, JHARKHAND, PIN-834002
दूरभाष/Telephone: 2970311/2253254/2251709/253879 फैक्स/Fax: 0651-2251709/2253879
Website: http://mausam.imd.gov.in/ranchi/,e-mail: metranchi@gmail.com, mcranchi.fs@gmail.com

Years of Service to the Nation
राष्ट्र सेवा के 150 वर्ष

प्रेस विज्ञप्ति

दिनांक: 03.08.2025

विशेष बुलेटिन- 02

विषय: झारखण्ड में दिनांक 03 अगस्त के लिए के लिए कृषि पर भारी वर्षा की प्रभाव आधारित चेतावनी:-

मौसम प्रणाली (Synoptic System): (0830 IST के अनुसार)

- औसत समुद्र तल पर मानसून की द्रोणिका (Monsoon Trough) अमृतसर, चंडीगढ़, शामली, शाहजहाँपुर, लखनऊ, छपरा, बांकुरा, कैनिंग और फिर दक्षिण-पूर्व की ओर उत्तर-पूर्व बंगाल की खाड़ी तक पहुँची।
- उत्तर-पूर्व बिहार और आसपास के क्षेत्रों पर ऊपरी हवा का चक्रवाती परिसंचरण (Upper air cyclonic circulation) उत्तर-पश्चिम बिहार और उससे सटे उत्तर-पूर्व उत्तर प्रदेश पर बना हुआ है और औसत समुद्र तल से 4.5 किमी ऊपर तक स्थित है, जो ऊँचाई के साथ दक्षिण-पश्चिम की ओर झुका हुआ है।

प्रभाव :

इस मौसमी प्रणाली के प्रभाव से झारखंड के कुछ जिलों में आज भारी वर्षा होने की संभावना है। किसानों से अनुरोध है कि वे सतर्क रहें और आवश्यक सावधानी बरतें। इस दौरान वज्रपात और तेज़ हवाओं (30-40 किमी प्रति घंटा) की भी संभावना है।

- **भारी वर्षा से प्रभावित होने वाले जिले :**

दिनांक	मध्य झारखण्ड (राँची, बोकारो, गुमला, हज़ारीबाग, कोडरमा, धनबाद, लोहरदगा , खूंटी तथा रामगढ)	दक्षिणी झारखण्ड (पूर्वी सिंघभूम, पश्चिमी सिंघभूम, सिमडेगा तथा सरायकेला खरसावाँ)	उत्तर-पश्चिमी झारखण्ड (पलामू, गढ़वा, चतरा तथा लातेहार)	उत्तर-पूर्वी झारखण्ड (देवघर, दुमका, गिरिडीह, गोड्डा, जामतारा, पाकुर तथा साहेबगंज)
03.08.25	राज्य के दुमका, गोड्डा, पाकुर ,साहेबगंज,गढ़वा, पलामू, चतरा, लातेहार, हजारीबाग और कोडरमा जिलों में कहीं-कहीं पर भारी वर्षा की संभावना है।			

भारी वर्षा वाले जिलों को नीचे मानचित्र में भी दर्शाया गया है ।

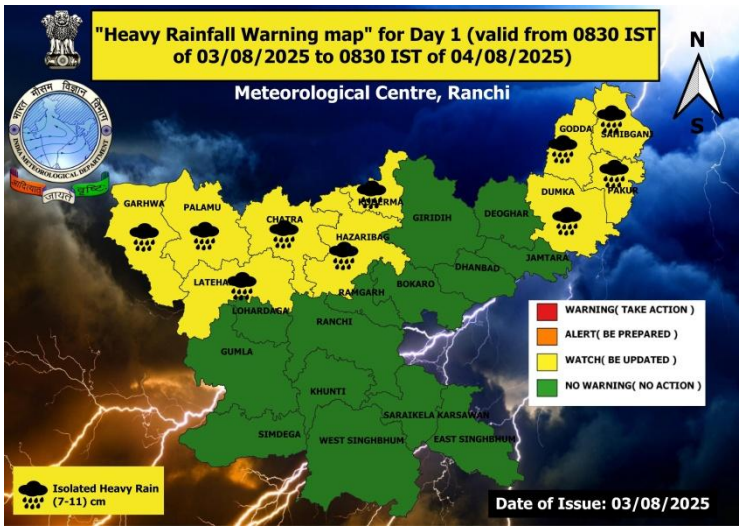

अतः मौसम केंद्र ,राँची द्वारा बताए गए निम्न बातों का ध्यान रखें :-

Crop	Impact	Mitigation
फल एवं सब्ज़ियों	बुवाई /रोपाई से पहले जल जमाव । बोये गये बीजों का विस्थापन । जल जमाव के कारण अंकुरण ना होना, जड़ों का सड़न । लत्तर वाली सब्ज़ियों के टूटने की संभावना । फफूंद संक्रमण की संभवना । फलों का झड़फलों पर दाग लगना ।	बुवाई/रोपाई से पहले जल निकासी की उचित सुविधा रखें। परिपक्व फल एवं सब्ज़ियों कि तुड़ाई कर लें एवं उन्हें सुरक्षित स्थानों पर रखें। खड़ी फसल में रोग के प्रसार को कम करने के लिए गिरे हुए फलों को हटा दें। लत्तर वाली सब्ज़ियों को सहारा दें। फफूंद संक्रमण की निगरानी रखें । किसी भी तरह के छिड़काव के लिए साफ़ मौसम के लिए रुकें।
धान, मक्का, मूंग अन्य खरीफ फसलें	निक्षालन के माध्यम से उर्वरक हानि। युवा पौधों को उखाड़ना बुवाई /रोपाई से पहले जल जमाव । बोये गये बीजों का विस्थापन । जड़ तथ तना सड़न का संक्रमण धान के नर्सरी में जल जमाव के कारण पौधे का सड़न सीधी बोई गई फसलों में जल जमाव के कारण अंकुरण ना होना	खेत में जल निकासी की उचित सुविधा बनाए रखें। धान के नर्सरी में जल निकासी की उचित सुविधा बनाए रखें। किसी भी तरह के छिड़काव के लिए साफ़ मौसम के लिए रुकें।
पशुपालन	मवेशियों को खुले में ना छोड़ें। मौसम की स्थिति देख कर ही उन्हें बाहर ले जाएँ। मवेशियों के घर को अच्छी तरह ढक दें।	
वर्षा जल संचयन	खेत में डोभा के निर्माण के माध्यम से यथास्थान संरक्षण और जल संचयन के माध्यम से वर्षा जल का प्रबंधन निचले सिरे पर भूमि क्षेत्र के)1/10वें भाग पर करें। ढलान के निचले हिस्से पर (10'X10'X10' का गड्ढा बना लें। जो सूखे दिनों मे फसलों की जल आपूर्ति को पूरा करने मे मदद कर सकते हैं ।	

कृषि-सलाह (मौसम पूर्वानुमान पर आधारित):-

सामान्य सलाह		जिन किसान का खेत अभी भी परती रह गया हो, वे मिट्टी में उपयुक्त नमी रहने पर अविलंब विभिन्न फसल की बोआई अनुशंसित विधि से करें। धान के फसल को छोड़कर अन्य सभी फसल की बोआई मेढ़ बनाकर ही करें। जिस किसान के पास ऊपरी खेत अभी भी परती रह गया है, वे कुलथी, उरद, मूंग या विभिन्न सब्जियों की खेती के लिए तैयारी करें। संक्रमण से बचने और वायु परिसंचरण में सुधार के लिए क्षतिग्रस्त, सड़ते हुए फलों और पीले/रोगग्रस्त पत्तियों को हटा दें। जो किसान पहले ही बोआई कर चुके हैं और अगर अंकुरण समान रूप से नहीं हो पाया हो तो खाली जगहों में पुन: बीज बोएँ या अगर एक ही जगह पौधों की संख्या ज्यादा हो गयी हो तो उसे उखाड़कर खाली जगह में लगा दें। खड़ी फसलों में सिंचाई रोक दें और जल निकासी की सुविधा रखें। मौसम साफ होने तक खाद या कीटनाशकों का छिड़काव रोक दें। वर्षा जल संचयन के लिए अपने खेत के निचले भाग में छोटे -छोटे गढ्ढे (डोभा) का निर्माण करें। किसानों को सलाह दी जाती है कि वे कीटभक्षी पक्षियों को आकर्षित करने के लिए खेत में 20-25 प्रति एकड़ की दर से Y या T आकार के लकड़ी के ब्लॉक लगाएं।
धान	**रोपाई से वानस्पतिक अवस्था**	मौजूदा उच्च तापमान की स्थिति के कारण धान की नर्सरी में थ्रिप्स का प्रकोप हो सकता है। फसल को इससे बचाने के लिए फिप्रोनिल 5 एस.सी. 2 मिली/लीटर पानी या थायमेथोक्सम 0.4 ग्राम/लीटर पानी की दर से डालें। जिन किसान भाइयों ने 2 से 3 सप्ताह पहले धान की रोपाई की हो वे धान में नत्रजन की शेष 50% मात्रा में से 25% नत्रजन का भुरकाव करें। शेष 25% का भुरकाव रोपाई के 6 सप्ताह बाद करें।
सीधी बुवाई धान	**वानस्पतिक अवस्था**	सीधी बुवाई वाले धान की फसल तीन से चार हफ़्ते की अवस्था में है। चूँकि आने वाले दिनों में हल्की से मध्यम बारिश का अनुमान है, इसलिए किसान भाई निराई गुड़ाई / खरपतवार नियंत्रण के लिए जाएँ। 35 किलो यूरिया प्रति एकड़ डालें, उसके बाद निराई-गुड़ाई करें और खाली जगहों को भरें। खाद डालते समय अतिरिक्त पानी निकाल दें और एक दिन बाद पानी को खेतों में डाल दें।
मक्का	**वानस्पतिक अवस्था**	वर्तमान मौसम की स्थिति मक्का की फसल तना मक्खी के संक्रमण के लिए अनुकूल है, इसे नियंत्रित करने के लिए, किसानों को सलाह दी जाती है कि वे साफ मौसम के दौरान मिथाइल डेमेटोन @ 1 मिली / लीटर या डाइमेथोएट @ 2 मिली / लीटर पानी का छिड़काव करें।
मड़ुआ	**वानस्पतिक अवस्था**	मड़ुआ की फसल जो 20 से 25 दिन पुरानी है उनमे निकाई - गुड़ाई करें, इसके पश्चात 22 किलोग्राम प्रति एकड़ यूरिया का भुरकाव करे।
सब्जी	**रोपाई से लेकर तुड़ाई तक**	15 से 20 दिन टमाटर के बिचड़े की रोपाई मुख्य खेतों में करें। कतार से कतार की दुरी 60 सेंटीमीटर तथा पौध से पौध की दुरी 40 सेंटीमीटर रखें। किसानों को सलाह दी जाती है कि वे टमाटर, मिर्च, प्याज और बैंगन की रोपाई के समय नाइट्रोजन की आधी मात्रा तथा फास्फोरस और पोटाश की पूरी मात्रा दें तथा नाइट्रोजन की शेष मात्रा 40-50 दिन बाद दें। खाद डालने से पहले जल निकासी कर लें।
पशुपालन		वर्तमान मौसम में मवेशियों में संक्रमित रोग के लगने की आशंका बहुत ज्यादा रहती है। अत: अपने जानवरों को खुला नहीं छोड़े तथा यह विशेष ध्यान रखें कि मवेशी बाहर का संक्रमित पानी नहीं पीने पाये।
कुक्कुटपालन		पिछले कुछ दिनों से बार-बार होने वाली बारिश के कारण उच्च आर्द्रता के कारण पक्षियों में फंगल रोग होने की अधिक संभावना है, इसलिए पोल्ट्री कूड़े में चूना को अच्छी तरह से मिलाएँ।

पूर्वानुमान पदाधिकारी
मौसम केंद्र, रांची